SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भाषा विज्ञान का परिचयात्मक अध्ययन

शोभित कुमार, शोधार्थी, हिंदी विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
शोभित कुमार, शोधार्थी
E-mail : shobhitspn4@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/06/2024
Revised on : 09/08/2024
Accepted on : 20/08/2024
Overall Similarity : 03% on 10/08/2024

शोध सार

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसके बिना सामाजिक संरचना के विकास की परिकल्पना करना ही व्यर्थ है। मानव समूह भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता रहा है। इन्हीं भावनाओं से सामाजिकता का निर्माण और इस सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया से साहित्य, कला एवं संस्कृति का विकास हुआ है। भाषा ने जहाँ हमारे विचारों का संरक्षण किया, वहीं श्रेष्ठ मानव समुदाय के निर्माण में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। भाषा ने जब साहित्य का रूप धारण किया तो यह साहित्य समाज की पहली प्राथमिकता बनकर उभरा। मानव संस्कृति की सलिला को गति देने के लिए विविध भाषाओं का सम्मिश्रण साहित्य में होना आरम्भ हुआ साथ ही भाषा के अनेक स्वरूपों पर भी चर्चा आरम्भ हो गई। भाषा के विद्वान आचार्यों ने उच्चारण के आधार पर भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया। लेखन के आधार पर लिपि को वैज्ञानिक स्वरूप देने का भी यत्न किया। इन्हीं प्रयत्नों का सुफल है भाषा विज्ञान का वृहद् कोष। भाषा विज्ञान का प्रचुर वांग्मय इसकी बढ़ती लोकप्रियता का परिचायक है। प्रस्तुत शोध पत्र में भाषा विज्ञान के विभिन्न अंगों का परिचयात्मक अनुशीलन तो किया ही गया है, साथ ही उसके महत्त्व एवं उपादेयता पर भी यत्किंचित प्रकाश डालने का प्रयत्न है।

मुख्य शब्द

भाषाविज्ञान, ध्वनि विज्ञान, स्वन–स्वनिम, रूप विज्ञान, व्याकरण.

भाषा मनुष्य के विकास का स्वर्ण कलश है। इसकी आभा से ही मानव ने चहुमुखी विकास किया है। भाषा के विकास से ही मनुष्य ने अनेक संसाधनों को प्राप्त कर अपनी उन्नति को नवीन आयाम प्रदान किये है। अनादि काल से मानव अभिव्यक्ति को लेकर अनेक प्रयोग

करता आ रहा है। विज्ञान मानव जीवन की विशेष घटना है जिससे उसका जीवन परिवर्तित हुआ। वृक्षों पर रहने वाला आदिमानव आज चाँद पर जाने के स्वप्न को सहज ही पूर्ण कर रहा है। ज्ञान की इस शाखा को बहुमुखी बनाने के लिए मानव जाति ने भाषा के विविध स्तरों पर प्रयोग किये और इस भाषा को विज्ञान सम्मत बनाने के लिए 'भाषा विज्ञान' की 'विद्या शाखा' की स्थापना की।

'भाषा–विज्ञान' शब्द में दो पदों का प्रयोग हुआ है। 'भाषा' तथा 'विज्ञान', भाषा–विज्ञान को समझने से पहले इन दोनों पदों का अर्थ समझना आवश्यक है। 'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से निस्तृत हुआ है, जिसका अर्थ है– व्यक्त वाक् (व्यक्तायां वाचि)। 'विज्ञान' शब्द में 'वि' उपसर्ग तथा 'ज्ञा' धातु से 'ल्युट्' (अन्) प्रत्यय लगाने पर बनता है। सामान्य रूप से 'भाषा' का अर्थ है 'बोल–चाल की भाषा या बोली' तथा 'विज्ञान' का अर्थ होता है 'विशेष ज्ञान'। अर्थात् भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाली विधा को 'भाषा विज्ञान' के नाम से अहिवित किया जाता है। भाषा का परिचय देते हुए प्रसिद्ध भाषा शास्त्री भोलानाथ तिवारी अपनी पुस्तक 'भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिन्दी भाषा' में लिखते हैं– 'भाषा' शब्द का संबंध 'भाष' (बोलना) धातु से है अर्थात् 'भाषा' का शब्दार्थ है जिसे बोला जाए किन्तु मोटे रूप से उन सभी साधनों को भाषा कहते हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता या सोचता है। अध्यापक मेज पर हाथ पटककर विद्यार्थियों को चुप करा लेता है, रेलगाड़ी का गार्ड हरी झंडा दिखाकर ड्राइवर को ट्रेन चलाने का संकेत देता है, गूँगे आपस में हाथ के संकेतों से बात करते हैं, पिता अपनी घूरती हुई दृष्टि से लड़के पर अपनी नाराजगी प्रकट कर देता है और परीक्षा में बैठा हुआ विद्यार्थी विना उच्चारण किए चुपचाप मूक भाषा के माध्यम से सोचता है कि कौन प्रश्न पहले करे और उसे कैसे शुरू करे। इस प्रकार अपने विस्तृततम अर्थ में भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को दूसरों पर व्यक्त करते हैं या सोचते हैं।''[1]

हम कभी–कभी सांकेतिक माध्यमों की सहायता से भी भावों और विचारों का सम्प्रेषण बड़ी सरलता से कर देते हैं। ये चेष्टाएँ भाषा का प्रतीक बन जाती हैं, किन्तु मानव भावों को प्रकट करने का सबसे उपयुक्त साधन वह वर्णनात्मक भाषा है जिसे 'मौखिक भाषा' के रूप में पहचाना जाता है। इसमें विभिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए कुछ निश्चित उच्चारित ध्वनियों का आश्रय लिया जाता है। भाषा हम उन शब्दों के संयोजन को कहते हैं जो विभिन्न अर्थ संकेतों से सम्पन्न होती है। इस प्रक्रिया से हम अपने वैचारिक भावों को आसानी से दूसरों के प्रति प्रकट कर सकते हैं। इस प्रकार भाषा को परिभाषित करते हुए कह सकते हैं कि भाषा मानव समाज में विचारों और भावों का आदान–प्रदान करने हेतु अपनाया जाने वाला एक सशक्त माध्यम है जो मनुष्य के उच्चारण अवयवों से प्रयत्नपूर्वक निसृत की गई ध्वनियों का सार्थक प्रयोग होता है। ये ध्वनि–समूह शब्द का रूप तब लेते हैं जब वे किसी अर्थ से सम्पृक्त हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो सम्पूर्ण ध्वनि विज्ञान भाषा के निर्माण में मानव अवयवों को साथ लेकर एक क्रमिक व्यवस्था का अध्ययन करता है। यह 'ध्वनि विज्ञान' भाषा के एकीकरण, मानकीकरण और वैश्विक पटल पर अपने सम्बन्धों की जिज्ञासा को लेकर समाधान प्रदान करती है। भारोपीय भाषाओं का विज्ञान सम्मत अध्ययन होने के उपरान्त ही यह ज्ञात हुआ कि इसकी ऐतिहासिकता विश्व की अन्य भाषाओं से कहीं कमतर नहीं। बल्कि भारत की प्राचीन वैदिक भाषा का विकास तब प्रौढ़ हो चुका था जब अन्य देशों में भाषा व्याकरण ने जन्म भी नहीं लिया था।

भाषा यदि भावों की अभिव्यक्ति है तो भावों से सही व्यक्त करना भाषा का व्याकरण है। व्याकरण के शुद्ध होने का परिमापन विज्ञान है। भाषा ने मनुष्य के विकास के समस्त चरणों को आत्मसात् किया है। भारतीय ज्ञान का प्रारंभ वेदों से स्वीकार किया जाता है। ऐसे में भाषा विस्तार का अध्ययन भी वेदों से प्रारंभ होता है, ऐसा कहना अतिशयोक्ति न होगी। डॉ. श्री भगवान तिवारी का मत है– ''प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का प्राचीनतम गंथ 'ऋग्वेद' है। वास्तव में यह विभिन्न युगों का संग्रह है। इसमें मंत्रों का संग्रह किया गया है। उन्हें देखने से यह ज्ञात होता है कि 'ऋग्वेद' की रचना–प्रक्रिया विभिन्न कालों एवं स्थानों में सम्पन्न हुई है। स्थान एवं काल–भेद के कारण ऋग्वेद की भाषा में वैभिन्नय दिखलाई पड़ता है। 'ऋग्वेद' में कुल दस मंडल हैं जिनमें आठ मंडलों की रचना पहले हुई है पर प्रथम और दशम मंडल की रचना बाद में हुई है, उसे वैदिक भाषा कहते हैं। वैदिक संस्कृत को छान्दस भी कहते हैं। वैदिक काल के ऋषियों ने अपने उपास्य देवों की प्रशंसा में ऋचाओं की रचना की। इन ऋचाओं के संकलन को 'ऋग्वेद

संहिता' की संज्ञा दी गई। वेदपाठी ब्राह्मणों के सप्रयास से यह ग्रंथ आज तक सुरक्षित रह सका है। विद्वानों ने वैदिक साहित्य के अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद– इन चारों की गणना की है।''[2]

वैदिक संस्कृत से भारतीय आर्य भाषाओं की यात्रा प्रारंभ होती है जो लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होती हुई आधुनिक हिन्दी के रूप में प्रतिष्ठित है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पूर्व कार्यकारी उपाध्यक्ष सोम ठाकुर इस समृद्ध हिन्दी भाषा की बोलियों का परिचय देते हुए लिखते हैं– ''पश्चिमी क्षेत्र से ही समस्त भारतवर्ष में आर्य सभ्यता का प्रसार हुआ था। शौरसेनी अपभ्रंश से उद्भूत पश्चिमी हिन्दी सभी प्राकृतों में सबसे अधिक संस्कृतनिष्ठ है। इसके अन्तर्गत पाँच बोलियाँ हिन्दोस्तानी, बाँगरू, ब्रज भाखा, कनौजी तथा बुंदेली आती हैं।''[3]

भाषा के महत्त्व को इंगित करते हुए डॉ. प्रणोति पाटिल अपने शोध में लिखते हैं – ''एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह परस्पर सहयोग व साहचर्य आधारित जीवन जिये, क्योंकि इसके बिना समाज में उसके विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है लेकिन प्रश्न यह है कि यह सहयोग और साहचर्य कैसे होगा? यदि केवल साथ रहने से विकास संभव है तो पशु–पक्षी और जीव–जंतु भी झुंड में ही रहते हैं, तो क्या वे किसी सम्य समाज के निर्माण तक पहुँच पाए है? निश्चित ही इसका उत्तर है नहीं फिर ऐसा क्या है जो मनुष्य अपना एक सभ्य समाज बना सका। इसके अनेक कारक हो सकते है, किंतु भाषा इसका एक ऐसा महत्त्वपूर्ण कारक है जिसने मनुष्यों के मध्य प्रेम व सौहार्द बढ़ाने तथा आपसी भाई चारा स्थापित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक–दूसरे से संपर्क बनाने, दूसरों तक अपनी भावनाएँ–संवेदनाएँ पहुँचाने, उन्हें प्रभावित करने में भाषा ही अग्रणी भूमिका निभाती रही है।''[4]

इसमें कोई दो मत नहीं कि भाषा के अभाव में मानवीय सभ्यता विकसित नहीं हो सकती थी। हां यदि इसका उदाहरण लें तो बहुत से ऐसे समूह हैं जो वैज्ञानिक भाषा के अभाव में अपना सम्पूर्ण जीवन यूं ही व्यतीत करते जा रहे हैं, जिनके विकास का कुछ भी अता–पता नहीं है। मनुष्य ने जब समूह में रहना सीखा तो भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी चुन लिया। बड़े हर्ष का विषय है कि इस माध्यम का वह वैज्ञानिक परीक्षण भी कर रहा है। प्रसिद्ध भाषा शास्त्री श्यामसुंदर दास अपनी पुस्तक 'भाषा विज्ञान' में लिखते हैं– ''भाषा विज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें भाषामात्र के भिन्न–भिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाता है। मनुष्य किस प्रकार बोलता है, उसकी बोली का किस प्रकार विकास होता है, उसकी बोली का भाषा में कब, किस प्रकार और कैसे–कैसे परिवर्तन होता है, किसी भाषा में दूसरी भाषाओं के शब्द आदि किन–किन नियमों के अधीन होकर मिलते हैं, कैसे तथा क्यों समय पाकर किसी भाषा का रूप और का और हो जाता है तथा कैसे एक भाषा परिवर्तित या विकसित होकर पूर्णतया स्वतंत्र एक–दूसरी भाषा का रूप धारण कर लेती है–इन विषयों में तथा इनसे सम्बन्ध रखने वाले और सब उप–विषयों का भाषा विज्ञान में समावेश होता है। इसमें शब्दों की उत्पत्ति, रूप–विकास तथा वाक्यों की बनावट आदि सभी पर विचार किया जाता है। सारांश यह है कि भाषा विज्ञान की सहायता से हम किसी भाषा का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन, अध्ययन और अनुशीलन करना सीखते हैं, और जब हम इस प्रकार का विवेचन, अध्ययन और अनुशीलन कर लेते हैं, तब उसी दृष्टि से किसी दूसरी भाषा अथवा अनेक भाषाओं का विवेचन करते हैं तथा एक भाषा के सिद्धान्तों तथा नियमों आदि का दूसरी भाषा या भाषाओं के सिद्धान्तों और नियमों आदि से मिलान करते और आपस में उनकी तुलना करते हैं।''[5]

इस भाषा विज्ञान को बड़े सरल शब्दों में परिभाषित करते हुए डॉ. प्रणोति पाटिल लिखते हैं– ''भाषा ध्वनि द्वारा तैयार एक ऐसी व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अपने विचारों का ठीक प्रकार से आदान–प्रदान करने में समर्थ होता है। इसका भी एक विज्ञान है, जिसे भाषा विज्ञान कहते हैं। भाषा विज्ञान में भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. भोलानाथ तिवारी ने भारत में भाषा विज्ञान का विकास पाणिनि की अष्टाध्यायी से माना है। इसके विकास का प्रथम चरण संस्कृत भाषा से जुड़ा हुआ है। वेदों की रचनाओं में इसके सूत्र मिलते हैं। वैदिक संहिताओं के पश्चात् ब्राम्हण और आरण्यक ग्रंथों में भी भाषा विज्ञान का विकास देखने को मिलता है, जो क्रमशः बढ़ते हुए जन भाषा तक पहुँच गया। शिक्षा ग्रंथों में भाषा वैज्ञानिकों ने ध्वनि की

मीमांसा प्रस्तुत की थी। पाणिनीय, नारदीय, भारद्वाज व याज्ञवल्क्य शिक्षा ग्रंथ इसके उदाहरण हैं। भाषा विज्ञान के विकास में निरुक्तों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है। विभिन्न ऋषि–मुनियों द्वारा भी गुरुकुलों में भाषा विज्ञान संबंधी चिंतन किया जाता रहा। आठवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी तक जिनेंद्र, भर्तहरि तथा कय्यट ने भाषा विज्ञान के विकास में अपना योगदान दिया। मुगलों के समय कौमुदियों के रूप में भाषा विज्ञान ने प्रगति की थी। आधुनिक काल की उन्नीसवीं सदी ने तो भाषा विज्ञान के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। इस सदी में पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने भाषा विज्ञान के विकास में कठिन परिश्रम किया। बीम्स, डी. ट्रंप, विशप काल्डेवल, कैलाग, जॉर्ज अब्राहम, ग्रियर्सन, डॉ. हर्वली, टर्नर, जूल ब्लॉक, मैक्समूलर, डॉ. बाबूराम सक्सेना, सर रामकृष्ण गोपाल भंडारकर आदि इस सदी के प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक रहे। बीसवीं शताब्दी में डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. हरदेव बाहरी जैसे अनेक नाम हैं जिन्होंने भाषा विज्ञान को और अधिक कसौटियों पर कस कर तैयार किया है।''[6]

भाषा विज्ञानी 'भाषा विज्ञान' की निम्न प्रमुख शाखाओं का उल्लेख करते हैं:

1. वाक्य विज्ञान।
2. रूप विज्ञान (पद विज्ञान)।
3. ध्वनि विज्ञान।
4. अर्थ विज्ञान।

वाक्य विज्ञान

भाषा का प्रमुख कार्य भावों और विचारों का आदान–प्रदान करना है। भावों और विचारों के आदान–प्रदान में वाक्यों का होना अति आवश्यक है। इन वाक्यों की संरचना का सांगोपांग अध्ययन ही वाक्य विज्ञान कहलाता है। दूसरे शब्दों में 'वाक्य विज्ञान' भाषा में प्रयुक्त होने वाले वाक्यों का वैज्ञानिक अध्ययन है। इसके तीन रूप माने जाते हैं– समकालिक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक।

वस्तुतः वाक्य रचना का सम्बन्ध पदक्रम, अन्वय, निकटस्थ अवयव केन्द्रिकता पर आधारित होता है। भाषा विज्ञान में वाक्य विज्ञान को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। इसके महत्त्व को देखते हुए इसपर जो शोधकार्य अथवा विवेचना हुई है वह अपर्याप्त है।

रूप विज्ञान

वाक्य का निर्माण रूपों से होता है। यही कारण है कि भाषा वैज्ञानिक अध्ययन क्रम में वाक्य के बाद रूपों पर विचार किया जाना समीचीन माना गया है। रूप विज्ञान को 'पद रचनाशास्त्र' भी कहा गया है। रूप विज्ञान के अंतर्गत संबंध तत्व, उसके प्रकार और रूप, भाषा के वैयाकरणिक रूपों के विकास, उसके कारण तथा धातु, उपसर्ग, प्रत्यय आदि उन तमाम अंगों एवं उपांगों पर विचार किया जाता है जिनसे पद या रूप बनते हैं। रूप निर्माण या रूप निर्माण की प्रक्रिया भी इसके अंतर्गत आती है। इसका अध्ययन भी ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा समकालिक इन तीनों रूपों में किया जाता है।

ध्वनि विज्ञान

ध्वनियाँ शब्दों का आधार होती हैं। ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत भाषा की ध्वनियों पर अनेक प्रकार से विचार किया जाता है। इस शाखा के अंतर्गत ध्वनि शास्त्र एक विभाग है, जिसमें ध्वनि से संबंध रखने वाले अंगों यथा– मुख–विवर, नासिका–विवर, स्वर–तंत्री और ध्वनि यंत्र आदिसे ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया तथा ध्वनि–लहर और उसके सुनने आदि का भी अध्ययन किया जाता है। ध्वनि प्रक्रिया पर उसके कारणों एवं दिशाओं के विश्लेषण के साथ विचार होता है। इस विज्ञान के अध्ययन के भी पहले की तरह ही ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा समकालिक तीन रूप होते हैं। इसमें एक ही भाषा परिवार की भाषाओं को लेकर ध्वनि–विकास पर विचार करके नियमों का निर्धारण किया जाता है। प्रसिद्ध 'ग्रिम' नियम का संबंध ध्वनि–विज्ञान से ही है। इसमें भाषिक इतिहास का अध्ययन भी ध्वनि की दृष्टि से किया जाता है। ध्वनि–विज्ञान के अंतर्गत ध्वनि–ग्राम विज्ञान जैसे कुछ नये उपविभाग भी बनाए

गये हैं। इन उपविभागों में ध्वनि विज्ञान के प्रत्येक अंग का सूक्ष्मतर अध्ययन किया जाता है। ध्वनि विज्ञान के सटीक अध्ययन को भाषा विज्ञान की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि कहा जाता है।

अर्थ विज्ञान

भाषा विज्ञान में अर्थ विज्ञान का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। शब्द यदि भाषा का शरीर है तो अर्थ उसकी आत्मा है। भाषा वैज्ञानिकों ने इस इकाई का अध्ययन करते समय सबसे पहले शब्द रूपी शरीर का अध्ययन किया। इसके बाद उसकी आत्मा पर विचार किया। आत्मा से तात्पर्य 'अर्थ' से है। शब्दों का अर्थ विवेचन काफी बाद में शुरू हुआ है, क्योंकि काफी समय तक आधुनिक भाषा वैज्ञानिक इस प्रकरण को भाषा विज्ञान के क्षेत्र का मानते ही नहीं थे। अब यह तय हो चुका है कि अर्थ का भाषा से अत्यंत गहरा संबंध होता है। 'अर्थ' का अध्ययन भी ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा समकालिक तीनों ही रूपों में होता है। अर्थ विज्ञान में प्रमुख रूप से शब्दों के अर्थ का निर्धारण, उसके स्तर, विकास और कारणों आदि पर विचार किया जाता है। इसके साथ ही अर्थ और ध्वनि के संबंध, पर्याय, विलोम आदि के विवेचन भी उसमें सम्मिलित होते हैं। भाषा विज्ञान में इस अध्ययन शाखा को 'अर्थ विचार' के नाम से भी जाना जाता है।

भाषा विज्ञान की ये सभी शाखाएँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी गयी हैं। इसके अतिरिक्त भाषा विज्ञान की कुछ गौण शाखाएँ भी हैं। भाषा को सूक्ष्म–अतिसूक्ष्म रूप में जानने–समझने के लिये ही भाषा वैज्ञानिक सदैव ही नवीन खोजों में संलग्न हैं।

भाषा विज्ञान में अध्ययन की उक्त विधियाँ भाषा के स्वरूप निर्धारण, भाषा की ऐतिहासिक पहचान एवं वर्तमान विकास प्रक्रिया का संचालन करती हैं। प्राचीन भाषा शास्त्रियों के मानदण्ड आज नए सन्दर्भों में परखे जा रहे हैं। भाषा विश्व ग्राम की परिकल्पना को साकार होते देख रही है। प्रत्येक देश अनेक भाषायी संस्कृतियों से जुड़कर अपने सम्बन्धों को विश्व में विस्तार देने का जो स्वप्न देख रहा है उसकी सम्पूर्ति कहीं न कहीं भाषिक संस्कृतियों से होती नजर आती है। समृद्ध देश की भाषा भी समृद्ध होगी, ऐसी भ्रान्ति पालने वाले भी कम नहीं है लेकिन यह सच है कि यदि किसी देश की भाषा समृद्ध है तो वह देश निश्चित ही समृद्ध होगा। भाषायी कबीलों से विकसित होती अनेक भाषाएँ विश्व की उन्नत भाषाएँ बन चुकी हैं। इन भाषाओं की संस्कृति आज भी संरक्षित है। संस्कृति ही क्यों वरन् ज्ञान की लम्बी परम्परा का सम्वरण ये भाषाएँ कर रहीं हैं। भाषा के विविध विद्वानों ने भाषा के महत्त्व को अपने–अपने ढ़ंग से वर्णित किया है। 'काव्यादर्श' में महाकवि दण्डी ने भाषा की महत्ता की ओर इंगित करते हुए लिखा है:

"इदधतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योत्तिरासंसारं न दीप्यते।।

अर्थात् यह सम्पूर्ण भुवन अन्धकारपूर्ण हो जाता, यदि संसार में शब्द–स्वरूप ज्योति अर्थात् भाषा का प्रकाश न होता। स्पष्ट ही है कि यह कथन मानव भाषा को लक्ष्य करके ही कहा गया है। पशु–पक्षी भावों को प्रकट करने के लिए जिन ध्वनियों का आश्रय लेते हैं वे उनके भावों का वहन करने के कारण उनके लिए भाषा हो सकती हैं किन्तु मानव के लिए अस्पष्ट होने के कारण विद्वानों ने उसे 'अव्यक्त वाक्' कहा है, जो भाषा–विज्ञान की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं रखती, क्योंकि 'अव्यक्त वाक्' में शब्द और अर्थ दोनों ही अस्पष्ट बने रहते हैं। मनुष्य भी कभी–कभी अपने भावों को प्रकट करने के लिए अंग–भंगिमा, भ्रू–संचालन, हाथ–पाँव–मुखाकृति आदि के संकेतों का प्रयोग करते हैं, परन्तु वह भाषा के रूप में होते हुए भी 'व्यक्त वाक' नहीं है। मानव भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वह 'व्यक्त वाक' अर्थात् शब्द और अर्थ की स्पष्टता लिए हुए होती है। महाभाष्य के रचयिता पतंजलि के अनुसार 'व्यक्त वाक' का अर्थ भाषा के वर्णनात्मक होने से ही है।"

वर्तमान समय भाषा के विविध रूपों को संरक्षित एवं सवंर्द्धित करते का है। भाषा के कितने रूप दम तोड़ चुके हैं और कितने तड़प रहे हैं। भाषा विज्ञान के सभी अंगों का अध्ययन भाषा की ऐतिहासिक समझ को विकसित करता है वहीं उसकी उपादेयता को भी प्रतिष्ठित करता है। इस शोध पत्र में भाषा के आंगिक अनुशीलन का संक्षिप्त प्रयास सन्निहित है।

निष्कर्ष

भाषा ने समाज को कैसे प्रभावित किया और वह स्वयं समाज से कैसे प्रभावित हुई इसका अध्ययन भाषा वैज्ञानिक निरंतर करते रहे हैं। भाषा का व्याकरणिक स्वरूप गढ़ने के लिए नियम–निर्देशों की पुस्तिकाएँ तैयार की गईं लेकिन भाषा ने इन नियम–निर्देशों की शृंखला को तोड़ने में रुचि दिखाई। संस्कृत की सुसंबद्ध शृंखला बहुत दिनों तक सामान्यजन को प्रभावित नहीं कर पाई। संस्कृत ने पालि, प्राकृत और अपभ्रंश तक का सफ़र तय किया। इस सफ़र में भाषा को बांधने के लिए विद्वानों ने कम प्रयास नहीं किए। भाषा की विकृति को दूर करने के लिए व्याकरण सम्मत नियम बनते रहे लेकिन भाषा तो स्वच्छंदता का अनुसरण करती रही। आज की वैज्ञानिक परंपरा भाषा की प्राचीनता से लेकर आधुनिकता तक का शोधन कर रही है।

सन्दर्भ सूची

1. तिवारी, भोलानाथ (2009) *भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिन्दी भाषा,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 15।
2. तिवारी, श्रीभगवान (2012) *हिन्दी भाषा का इतिहास,* भारत बुक सेंटर, लखनऊ, पृ. 18।
3. ग्रियर्सन, सर जॉर्ज अब्राहम (2006) *भारत का भाषा सर्वेक्षण (भाग 9),* उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. विक्रम, सुरेंद्र (2023) *हिन्दी बाल साहित्य शोध का इतिहास,* भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 359।
5. दास, श्यामसुंदर (2020) *भाषा विज्ञान,* लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 11।
6. विक्रम, सुरेंद्र (2023) *हिन्दी बाल साहित्य शोध का इतिहास,* भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 359–360।

****